श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान प्रवेशिका (3)

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर प्रथमवर्ष - 3

शहर Answer Sheet - 2021

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	માનવ જીવન
(२)	આરાધના
(३)	પ્રશંસા
(४)	પૂરન ઔર ગલન
(५)	ઉત્સર્પિણી કાલ
(६)	અભિનંદન
(७)	ન્યાય
(८)	શરમ
(९)	બાદર
(१०)	સ્વાર્થ
(११)	આતપ
(१२)	આહાર
(१३)	રાજઅવસ્થા
(१४)	ભંડાર
(१५)	લોભ
(१६)	સૂક્ષ્મ ઔર સ્પષ્ટ
(१७)	અશુભ વ્યાપાર
(१८)	સજ્જન
(१९)	સુક્ષ્મ જીવો
(२०)	ચંડકૌશીક

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	પ્રદેશો કા સમુહ
(२)	કુષમ સુષમ
(३)	ત્રિમુખ યક્ષ
(४)	દયા
(५)	अंधकार
(६)	સંભવ નાથ
(७)	धर्मास्तिकाय
(८)	શ્રાવણ
(९)	પ્રદેશ
(१०)	ગુણવાન
(११)	વારાણસી
(१२)	અદ્ધાકાલ
(१३)	માનવ
(१४)	મુક્તા શુક્તી
(१५)	વિશેષતા
(५)	એક
(६)	સાધારણ
(७)	અજીવ
(८)	મિલકર
(९)	निश्चय,संयोग
(१०)	પક્ષ
(११)	પત્તે
(१२)	મન
(१३)	સતોતેર હજાર
(१४)	અદ્રશ્ય
(१५)	વર્ષ
(१६)	ચલન
(१७)	प्रत्येक
(१८)	स्कंध
(१९)	ज्योति
(२०)	स्थिर

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	દિન
(२)	જાનના
(३)	સ્પર્શ
(४)	શ્વાસોશ્વાસ

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	6	(६)	3
(२)	9	(७)	1
(३)	2	(८)	5
(४)	7	(९)	10
(५)	8	(१०)	4

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	32
(२)	2
(३)	5 વર્ષ
(४)	107
(५)	22
(६)	10
(७)	25
(८)	1000
(९)	3773
(१०)	128

	प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर
(१)	×	(१)	3
(२)	✓	(२)	13
(३)	×	(३)	12
(४)	×	(४)	14
(५)	✓	(५)	19
(६)	✓	(६)	23
(७)	×	(७)	9
(८)	×	(८)	6
(९)	×	(९)	18
(१०)	✓	(१०)	15

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________ जांचनेवाले की सही ____________

प्रश्न - ८

सात शुद्धियां

१. द्रव्य पूजा - "स्नात शुद्धियों का पालन करते हुए विधि पूर्वक करनी चाहिये। ① थोड़े से पानी से स्नान कर शरीर शुद्ध करना ② स्त्रीयो को 3 व पुरुषो को 2 स्वच्छ वस्त्र पहनना ③ पूजा स्थिर मन से करनी चाहिये ④ भूमि शुद्ध अर्थात मंदिरजी मे से कचरा निकालना ⑤ दर्शन पूजा के लिये जो उपकरण हो उन्हे शुद्ध करने के पश्चात उपयोग मे लेना ⑥ द्रव्य पूजा मे द्रव्य न्याय पूर्वक उपार्जन किया हो वे लेना ⑦ पूजा प्रसंग के सभी द्रव्य तथा स्तुति से जिन पूजन शुद्धता पूर्वक करना।

२. हम जिस देश मे रहते हो वहा की संस्कृति, या रीतिरिवाज हो उनका पालन करना चाहिये। ~~आज~~ ऐसा न करने से हमे निंदा अपमान और तिरस्कार का सामना करना पड़ता है। आज सभी अनार्य देश की रीत को अपना रहे हैं और अपने देश की रीतभात भूल रहे हैं। खाने पीने घूमने फिरने मे ऐसे पागल बने है कि न समय का भान है न पहनावे का। अब जागृत होकर आर्य धरती के उत्तम सात्विक संस्कारमय एवं मर्यादा रहित जीवन अपनाये एवं मधुर फलो का आस्वाद ले

३. एक शरीर मे एक जीव जिसे भी हो वह प्रत्येक वनस्पित काय है। जैसे फल फूल, छिलका, तना, जड़ पत्ते और बीज प्रत्येक वनस्पिति काय है। एक वृक्ष में सात स्थान मे अलग-२ जीव है। जैसे फल मे अलग जीव है - फूल मे अलग। छाल मे अलग, तने व पत्ते मे अलग जीव है उस फल मे जितने बीज है सब मे अलग जीव है। परन्तु प्रत्येक जीव का स्वयं का शरीर अलग है इसलिये वो प्रत्येक वनस्पतिकाय कहलाता है।

४. दुषम सुषम नाम का छठ्ठा आरा इक्कीस हजार वर्ष प्रमाण होता है। इस आरे के मनुष्य का उत्कृष्ट आयुष्य बीस वर्ष का तथा शरीर एक हाथ का होता है इस आरे का मनुष्य का उत्कृष्ट आयुष्य बीस वर्ष का तथा शरीर का हाथ होता है। यह ताप व शीत सहन नही कर सकने के कारण गुफा मे रहेंगे। मत्स्यादि का भोजन करने वाले महाक्रोधी मर्यादा हीन और मरकर नरक मे जाने वाले होंगे। 6 वर्ष की स्त्री गर्भ धारण करेगी।

५. श्री संभवनाथ प्रभु पहले तीसरे भव मे धातकी खंड के ऐरावत क्षेत्र मे विपुलवाहन राजा थे। वीसस्थानक की आराधना की व तीर्थंकर नामकर्म बांधा और नवमे देवलोक मे देव हुए। प्रभु मागसर सुदि चौदस को जन्मे। चौवालीस लाख पूर्व राज्य किया फिर सांवत्सरिक दान देकर एक हजार राजाओ के साथ मागसर सुदि पुनम को दिक्षा ली। साठलाख पूर्व सम्पूर्ण आयुष्य भोगकर सम्मेतशिखर पर मासीक अनशन के साथ एक हजार मुनिवरो के साथ चैत्र सुदि पंचमी को मोक्ष सिधाये।